आलस्य और अलबेलापन - 35

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **माया के भिन्न-भिन्न विघ्नों के समय वा प्रकृति के भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के समय काम में लगाकर देखो कि जो मैंने मनन किया कि इस परिस्थिति के प्रमाण वा विध्न के प्रमाण यह ज्ञान रत्न मायाजीत बना सकते वा बनाने वाला है, वह प्रैक्टिकल हुआ अर्थात् मायाजीत बने?** वा सोचा था मायाजीत बनेंगे लेकिन मेहनत करनी पड़ी वा समय व्यर्थ गया? इससे सिद्ध है कि विधि यथार्थ नहीं थी, तब सिद्धि नहीं मिली। यूज़ करने का तरीका भी चाहिये, अभ्यास चाहिए।

➳ _ ➳ जैसे साइन्स वाले भी बहुत पावरफुल बॉम्बस (शक्तिशाली गोले) ले जाते हैं। समझते हैं-बस इससे अब तो जीत लेंगे। लेकिन यूज करने वाले को यूज़ करने का ढंग नही आता तो पावरफुल बॉम्ब होते भी यहाँ-वहाँ ऐसे स्थान पर जाकर गिरता जो व्यर्थ चला जाता। कारण क्या हुआ? **यूज़ करने की विधि ठीक नहीं। ऐसे, एक-एक ज्ञान-रत्न अति अमूल्य है। ज्ञान रत्न वा ज्ञान की शक्ति के आगे परिस्थिति वा विघ्न ठहर नहीं सकते। लेकिन अगर विजय नहीं होती है तो समझो यूज़ करने की विधि नहीं आती है।** दूसरी बात-**मनन शक्ति का अभ्यास सदा न करने से समय पर बिना अभ्यास के अचानक काम में लगाने का प्रयत्न करते हो, इसलिए धोखा खा लेते हो। यह अलबेलापन आ जाता है - ज्ञान तो बुद्धि में है ही, समय पर काम में लगा लेंगे। लेकिन सदा का अभ्यास, बहुतकाल का अभ्यास चाहिए।**

➳ _ ➳ नहीं तो उस समय सोचने वाले को क्या टाइटल देंगे?- कुम्भकरण। उसने क्या अलबेलापन किया? यही सोचा ना कि आने दो, आयेंगे तो जीत लेंगे। तो ऐसा सोचना कि समय पर हो जायेगा-यह अलबेलापन धोखा दे देता है। इसलिए हर रोज़ मनन शक्ति को बढ़ाते जाओ। **(10.01.1988)**

➢ ज्ञान रत्न

➳_ ➳ एक है ज्ञान रत्न को **धारण करना,**

➳_ ➳ एक है **बुध्धि तक रखना,**

➳_ ➳ एक है **जीवन में समा जाना,**

→ ज्ञान **लाइट** है

→ ज्ञान **माइट** है

→ ज्ञान का **एक एक रत्न अति अमूल्य** है

- सबको एक समान ही ज्ञान रत्न दिया गया है,
- फिर भी कोई मालामाल हो गया
- कोई बाप समान बन गया
- किसी के पास ज्ञान रत्न है
  - पर वो कार्य में नही लगा सकते है

→ ज्ञान **लड़ाई के लिये श्रेष्ठ शस्त्र** भी है

➢➢ मनन शक्ति

➳_ ➳ मनन शक्ति अर्थात **सागर के तले में जाना**

➳_ ➳ मनन शक्ति अर्थात **अन्तरर्मुखी हो जाना**

➳_ ➳ मनन शक्ति अर्थात **एक एक रत्न की गुह्यता में जाना**

➢➢ मनन करने की विधि क्या है ?

➳_ ➳ कोई भी ज्ञान की पॉइंट सुनते हो,

→ तो सोचो इस **पॉइंट का राज** क्या है?

- राज में जाओगे तो रस आयेगा

→ **किस समय** इसे कार्य में लगाया जा सकता है?

→ **किस विधि से** इसे कार्य में लगाया जा सकता है?

→ **दुसरो की सेवा प्रति इसे कैसे कार्य** में लगाया जा सकता है?

➢➢ मनन शक्ति का फायदा

➳_ ➳ जो बाप का खजाना वो मेरा खजाना

→ यह अनुभव बिना मनन शक्ति के नही हो सकता है

➳_ ➳ ज्ञान की कोई पॉइंट हमे बहुत अरछी लगती है, तो वो थोड़े समय के लिये ही अरछी रहती है,

- अगर विस्तार / स्पष्टीकरण / मनन / चिंतन / मंथन / गहराई में नही गये

- तो थोड़े समय के लिये वह पॉइंट अरछी है, फिर खो जायेगी
- कुछ समय याद रहेगी
- फिर भूल जायेगी

▶ इसके लिये ज्ञान के **हर पॉइंट को जीवन में समा** लो

▶ जीवन में **धारण कर लो**

▶ हर पॉइंट को **कार्य में लगाओ**

▶ स्वयं के प्रति भी, और दुसरो के प्रति भी

▶ और फिर उसे **चेक करो, तो मायाजीत बनेगे**

▶ माया आ नही सकेगी

▶ और आप शक्तिशाली बन जायेंगे

➢➢ मनन शक्ति का उपयोग कैसे करे ?

➳_ ➳ **मैं अधिकारी आत्मा हु..(इस पर मनन करो..)**

→ मैं अधिकारी आत्मा **क्यों** हु?

→ **किसने कहा** की मैं अधिकारी हु..

→ **कब** हु?

→ **किस कारण** से हु?

→ **क्या क्या मेरे अधिकार** है?

→ मुझे **कौन कौन से अधिकार प्राप्त** हुये है?

→ कोन कोन सी **AUTHORITY** प्राप्त हुई है?

- यह सारा उसका मनन चिंतन है..
- जो आत्मा ज्ञान का चिंतन नही करती
  - **वो गोया बीमार है**
  - ज्ञान रत्नों को उगारते रहना है
  - उसका चयन करते रहना है
  - तो आत्मा शक्तिशाली बनेगी

➳_ ➳ 1.. **अब इसके राज का सोचो..**

→ की मुझे ही बाबा ने **अधिकारी आत्मा क्यों** कहा?

→ सारे संसार की आत्माओ मेसे **मुझे ही क्यों चुना**?

→ क्या सन्यासियो के लिये भी कहा गया है?

→ की परमात्म सन्तान के लिये ही कहा गया है?

- यह सारा उसका विस्तार है..
  - एक एक ज्ञान के पॉइंट का **विस्तार** करना है
  - बाद में उसका **स्पष्टीकरण** करना है
  - विस्तार और स्पष्टीकरण में जाओ तो **मनोरंजन** का अनुभव होगा

➳_ ➳ 2.. **किस समय इसे कार्य में लगाना है?**

→ ऐसे ही कार्य में नही लग सकेगा

→ जब कोई ऐसी परिस्थिति आती है उस समय कार्य में लगाना है

- ज्ञान रत्नों में निखार तभी आयेगा
- जब वह परिस्थिति के समय कार्य में लगेगा

➳_ ➳ 3.. **किस विधि से इसे कार्य में लगाना है?**

→ किस विधि से कहा कार्य में लगाना वो जानना भी बहुत महत्वपूर्ण है

➳_ ➳ 4.. **दुसरो की सेवा प्रति कैसे इसे कार्य में लगाया जा सकता है?**

→ जब पहले हम अपने पर उसका **EXPERIMENT** करेंगे,

→ तब हम दुसरो को कह सकेंगे

➢➢ परिस्थिति

➳_ ➳ सदा का और बहुतकाल का अभ्यास होगा

- तो समय पर ज्ञान बुध्धि में EMERGE होगा

➳_ ➳ जीवन में कभी भी कुछ भी हो सकता है

→ कोई भी परिस्थिति आ सकती है

- **उस समय हमारे पास ज्ञान रत्न READY चाहिये**
- नही तो हमारी उस परिस्थिति में हार हो जायेगी
  - आज से इस समय से संकल्प करो की
  - **विजय दाता साथ है तो विजय कहा जायेगी**
  - **विजय मेरा जन्म सिध्ध अधिकार है**
  - **मैं कल्प कल्प की विजयी आत्मा हु**
  - मेरी हार हो ही नही सकती है
  - एक बार भी हार नही होनी चाहिये
  - इतना **ALERT CONSCIOUS** रहना है